कहानी की कथा

सुमन पटेल

यह लेख स्कूल में बनाए गए एक रीडिंग कॉर्नर के अनुभव को प्रस्तुत करता है। एक बच्ची किताबें देखने के लिए उत्सुक थी, और शायद उन किताबों को छूकर, पलटकर देखना चाहती थी, उसके साथ लेखिका एक कहानी पढ़ती हैं। धीरे-धीरे और बच्चे भी इसमें शामिल होते हैं और बातचीत आगे बढ़ती है। क्या बातचीत होती है, इसका विस्तार से विवरण इस लेख में है। यह विवरण बच्चों के ज़ेहन में किताब को पढ़ते हुए आने वाले विचारों को समझने का मौक़ा भी देता है। -सं.

किताबें बच्चों को कई तरीक़ों से लुभाती हैं। जो बच्चे दक्षता के साथ किताबें नहीं पढ़ पाते, ऐसे बच्चों को चित्रों वाली किताबें ख़ासकर अपनी तरफ़ आकर्षित करती हैं। बच्चे शुरुआत से ही पढ़ने की प्रक्रिया से जुड़ सकें, इसलिए विद्यालयों में 'पुस्तकालय' या 'रीडिंग कॉर्नर' बहुत ज़रूरी होते हैं। जिस विद्यालय की चर्चा हम इस लेख में करने जा रहे हैं, वहाँ शिक्षकों व बच्चों (तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा) के साथ 'पढ़ने का कोना' बनाने की प्रक्रिया शुरू की तो उन्होंने कई सवाल भी रखे। एक बच्चे ने अपनी बुन्देली भाषा में पूछा, "पुस्तकालय का होत है?" मैंने उसे बताया "जहाँ पढ़ने के लिए किताबें रखी जाती हैं।" तो दूसरे बच्चे ने बताया, "कहानी वाली किताबें न!" ऐसे कई सवालों पर बातचीत करते-करते एक दिन विद्यालय की दूसरी कक्षा के एक कोने में हमने साथ मिलकर एक रीडिंग कॉर्नर की स्थापना की। इसमें लगभग 35-40 किताबें थीं जिनमें *बरखा* सीरीज़, राज्य शिक्षा केन्द्र की अँग्रेज़ी एवं हिन्दी की किताबें, कुछ टीएलएम, गिनमाला एवं हम होंगे क़ामयाब (एचएचके) कार्यक्रम में दिए गए कहानी और कविता के पोस्टर शामिल थे। कुछ बच्चों को किताबों के रखरखाव और ध्यान रखने की ज़िम्मेदारी दी गई। शिक्षिका ने एक टेप लाकर भी रख दिया और बच्चों से कहा कि अगर कोई किताब फट भी जाए तो उसे टेप से जोड़कर ठीक कर दें। साथ ही कुछ और सामान्य ज़िम्मेदारियाँ भी उन्होंने बच्चों को दीं। लंच के ख़ाली समय में जो बच्चे जल्दी आ जाते, वे रीडिंग कॉर्नर में बैठकर किताबें पढ़ते या देखते थे।

रीडिंग कॉर्नर की शुरुआत को एक हफ़्ता ही हुआ था। उस दिन स्कूल में, कुछ शिक्षिकाएँ अनुपस्थित थीं। तभी मेरा ध्यान एक लड़की पर गया जो रीडिंग कॉर्नर में खड़ी होकर किताबें देख रही थी। मैं उसके पास गई और पूछा, "आप क्या पढ़ रही हो?" उसने मुझे किताब दिखाते हुए कहा, "जा किताब" (बुन्देली में 'जा' का अर्थ होता है 'यह')। मैंने कहा, "अच्छा, मुझे सुनाओ क्या लिखा है उसमें?" उसने कहा, "मुझसे पढ़ते नहीं बनता लेकिन चित्र तो पढ़ते बन जाता है।" मैंने कहा, "वाह! तो चित्र ही पढ़ते हैं।" यह बच्ची तीसरी कक्षा में पढ़ती है और *बरखा* सीरीज़ के स्तर-1 की कहानी 'मिठाई' की किताब हाथ में लिए थी।

हमारी बातचीत शुरू हुई। पहले पेज को दिखाते हुए मैंने उससे पूछा, "इसमें क्या हो रहा है?" (कहानी के चित्र यहाँ साथ ही दिए गए हैं)।

चित्र 1

वह बोली, "गधा है जो जलेबी, लड्डू, हलुआ (हलवा) को देख रहा है।" मैंने उससे पूछा, "यह कैसे पता कि यह गधा है?" ऐसा मैंने इसलिए पूछा क्योंकि एक दूसरे स्कूल का अनुभव था जहाँ एक बच्चे ने गधे को 'गाय' कहा था। हालाँकि, उस बच्चे को हिज्जे लगाकर पढ़ना आता था, उसने चित्र देखा और गधे के 'ग' को देखकर उसे गाय बोल दिया था। लेकिन मिठाई को उसने सही पढ़ा था। इस बच्ची ने जवाब दिया, "पता है।" फिर कुछ नहीं बोली।

मैंने अगला पेज खोला और कहा, "यह पढ़ो।" वह बोली, "गधा पेड़ के पास बैठकर घास खा रहा था और घास उसके मो (मुँह) से गिर

चित्र 2

गई थी।" मैंने पूछा, "घास कहाँ गिर रही है?" उसने चित्र पर ही उँगली रखकर बताया। मैंने पूछा, "और कुछ है इसमें?" वह बोली, "नहीं, गधा कछू (कुछ) देख रहा है।" मैंने पूछा, "क्या देख रहा है?" वो कुछ नहीं बोली।

अब अगले पेज को पढ़ना था। मैंने पूछा, "इसमें क्या लिखा है?" वो बोली, "गधा के मो से घास गिर रही है तो सब जानवर उसे देख रहे हैं और गधा ग़ुस्सा हो रहा है।" मैंने कहा, "काय गिर रओं हुज्जे ओके मो से चारो?" (क्यों गिर रही होगी उसके मुँह से घास)। वो बोली, "कायसे वो हाथ से नहीं खाता।" (क्योंकि वो हाथ से नहीं खाता)। मैंने

चित्र 3

पूछा, "अच्छा, इसमें कौन-कौन से जानवर हैं?" वो बोली, "कुत्ता, ख़रगोश, मकड़ी, हाथी, गधा, गिलहरी।" वह बिल्ली को उल्टे में नहीं पहचान पाई थी और भालू को कुत्ता पहचाना। यह जानते हुए, कि वह बुन्देली बोलती है, मैंने उससे बुन्देली में बात करना शुरू किया। वह बुन्देली मिली हिन्दी में ही बोल रही थी। हालाँकि, पहले हिन्दी ज़्यादा, बुन्देली कम बोल रही थी लेकिन बाद में ज़्यादा बुन्देली, कम हिन्दी बोलने लगी। धीरे-धीरे कुछ और बच्चे भी हमारे साथ आ गए और बातचीत सुनने लगे।

भालू ने कहा – शहद खा लो।

चित्र 4

अब हम अगले पेज पर थे। वो बोली, "भालू शहद खाने वाला है और उसके ऊपर मधुमक्खी है।" मैंने पूछा, "तुम्हें कैसे पता यह शहद है? मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे चाय गिर गई हो।" वह बोली, "नहीं, शहद ही है।" मैंने पूछा, "कहाँ देखा तुमने शहद खाता हुआ भालू?" वो बोली, "मोगली वारे कार्टून में बलू भालू शहद खाता है और उसके पीछे मधुमक्खी लग जाती है तो वो पानी में कूद जाता है।" अगले पेज के चित्र को देखकर ख़ुद से ही बोली, "गधे की पूँछ फूलों में फँस गई थी तो वो उसे देख रहा था और पूँछ फँसने से फूल पर बैठी तितली उड़ गई है।" मेरे लिए यह बहुत आश्चर्यजनक था। इस प्रकार से मैंने भी इस चित्र का अवलोकन नहीं किया था। फिर हमारे साथ बैठा हुआ एक बच्चा बोला, "बीच का फूल टूट गया है, देखो!" मैंने 'हाँ' कहा, फिर हमने कुछ तितलियों और फूलों पर बातचीत की। अब कुछ और बच्चे जो

गधे ने मना कर दिया।

चित्र 5

बहुत देर से सुन रहे थे, वो भी हमारी बातचीत में रुचि लेने लगे और जवाब देने लगे।

फिर हम आगे बढ़े और उसने बताया, "ख़रगोश गाजर खोद रहा है।" मैंने कहा, "कैसे पता? मुझे तो लग रहा है कि वह गाजर खा रहा है।" तब वो बोली, "नहीं, खोद ही रहा है खा नहीं रहा।" एक अन्य बच्चा बोला, "देखो, वो गाजर उखाड़-उखाड़ कर सामने रख रहा है, इतनी सारी उखाड़ लीं।" फिर पढ़ना जानने वाला एक बच्चा बोला, "नहीं, ख़रगोश कह रहा है गाजर खा लो।" मैंने कहा, "मतलब वह किसी को गाजर खाने के लिए दे रहा है।" जिस बच्चे ने पढ़ा था, उसने 'हाँ' बोला। पर वो बच्ची बोली, "नहीं दे रहा है क्योंकि जब

खरगोश ने कहा – गाजर खा लो।

चित्र 6

हम किसी को कुछ देते हैं तो उसके ऐसे हाथ होते हैं (उसने सामने की तरफ़ हाथ किए) और ख़रगोश ऐसे हाथ किए है। ऐसे में गाजर खोदा जाता है, दिया नहीं जाता।" फिर एक बच्ची बोली, "मैडम, मेरे मामा के घर खेत है। हम जब उसमें मूली लेने जाते हैं, तो ऐसे ही खोदते हैं।" उसने ख़रगोश के जैसे हाथ करके बताए। पर जिस बच्चे ने पढ़ा था वो अपनी बात पर तर्क दे रहा था। अब मेरे सामने मुश्किल आ गई कि मैं किसको सही बोलूँ, क्योंकि सब अपने-अपने हिसाब से सही तर्क दे रहे थे। जिस बच्चे ने पढ़ा था उसका भी तर्क था और जिसने सिर्फ़ चित्र देखा उसका अपना तर्क था। तो मैंने एक सवाल किया, "अच्छा, अगर ख़रगोश गाजर खोदकर

खाता तो उसके हाथ कैसे होते?" इसपर सब एकमत हुए कि अगर वो खाता तो गाजर उल्टी दिखाई दे रही होती। जैसी चित्र में है, वैसी नहीं। गाजर नोक की तरफ़ से खाई जाती है। यह सब बातचीत बुन्देलखण्डी मिली हिन्दी में हो रही थी।

चित्र 7

हम आगे बढ़े और अगले चित्र पर बातचीत हुई। यहाँ मैंने नीचे के टेक्स्ट पर हाथ रख लिया। फिर पूछा तो उस बच्ची की तरफ़ से जवाब आया, "गधा किसी को ग़ुस्से में देख रहा है।" मैंने पूछा, "और कुछ नहीं है?" वो बोली, "नहीं।" फिर दूसरे बच्चे ने बोला, "हाँ, ऐसे देख रहा है कि मैं तुम्हें खा जाऊँगा।" मैंने पूछा, "किसको खा जाएगा?" बच्चे बोले, "जिसको देख रहा है उसको।" शिक्षिका ने अब दूसरे बच्चों को भी भेज दिया और हम समूह में बात करने लगे। बातचीत बुन्देलखण्डी में हो रही थी।

चित्र 8

चित्र 9

हमने आगे बात करना शुरू किया। अगले चित्र पर मैंने पूछा, "क्या हो रहा है इसमें?" यहाँ अलग-अलग बच्चों की प्रतिक्रिया आई। पहला चित्र देखकर बच्चे ज़्यादा कुछ नहीं समझे। एक बच्चा बोला, "गधा ग़ुस्से में देख रहा है तो मकड़ी छुप रही है।" मैंने कहा, "इतने छोटे-से पत्थर के यहाँ कैसे छुपेगी?" फिर कुछ देर तक बच्चों ने सोचा। उसके बाद एक बच्चा बोला, "जो फ़त्तर (पत्थर) मिला वो वहाँ छुप गई।" मैंने कहा, "क्यों छुप रही होगी?" फिर एक बच्चा बोला, "मकड़ी नहीं, चींटी है।" सब उसकी तरफ़ देखने लगे। शायद उसने पढ़ लिया था जिसे मैं अपनी हथेलियों से छुपाए थी, क्योंकि यहाँ मुझे सिर्फ़ चित्र देखकर बच्चों के अनुभवों पर बातचीत करनी थी। वह बोला, "क्योंकि उसे गधे से डर लग रहा था। क्योंकि गधा फूँक मारता तो चींटी उड़ जाती।"

चित्र 10

अब मैंने दोनों पेजों को एक साथ सामने रखा। फिर बच्चों से पूछा, "इसमें क्या हो रहा है?" एक बच्चा बोला, "हाथी गन्ना ले जा रहा

चित्र 11

है।" एक अन्य बच्चे ने कहा, "हाथी गन्ना ले जा रहा है और गधा उसके सामने आ गया है तो गधा चिल्ला रहा है।" मैंने उससे पूछा, "क्यों चिल्ला रहा है?" जिस बच्ची से पहले बातचीत हो रही थी वह बोली, "गधे को हाथी से डर लग रहा है इसलिए चिल्ला रहा है।" मैंने उससे पूछा, "गधे को क्यों डर लग रहा है?" वो बोली, "क्योंकि हाथी गधे से बड़ा है।" अब यहाँ बच्चे पिछले पेज की बातचीत से इसे जोड़ रहे थे क्योंकि पहले मकड़ी या चींटी छोटी थी और गधा बड़ा, तो उन्हें गधे से डर लग रहा था। अब यहाँ हाथी बड़ा है और गधा छोटा, तो गधे को हाथी से डर लग रहा है। बच्चे बातचीत को जोड़ते बहुत जल्दी हैं।

हम अगले पेज पर गए और एक बच्चे ने तुरन्त कहा, "गिलहरी आम तोड़कर ले जा रही है और गधे ने उसे देखकर आँखें बन्द कर ली हैं।" मैंने पूछा, "गिलहरी आम तोड़ रही है तो वो गधा आँखें बन्द क्यों कर लेगा?" तब उसने कहा, "क्योंकि गधा अच्छा आदमी है।" इसपर

चित्र 12

चित्र 13

सब बच्चे हँस पड़े और बच्चा मुस्कुराते हुए चुप हो गया।

हम आगे बढ़े और अगला चित्र देखा। कुछ बच्चों ने पहले बिल्ली को शेर का बच्चा पहचाना, फिर मूँछ देखकर सबने उसे बिल्ली कहा। पर यहाँ किसी ने भी बिल्ली का बच्चा नहीं बोला। मैंने पूछा, "क्या हो रहा है?" बच्चे बोले, "बिल्ली गधे को देख रही है।" यहाँ सब क्लीयर थे कि बिल्ली गधे को देख रही है। मैंने पूछा, "क्या देख रही है?" वह बच्ची बोली, "गधा घास खा रहा है। उसके मो से घास गिर रही है तो बिल्ली उसे देख रही है।" उस बच्ची ने इस चित्र में भी सबसे पहले मुँह से गिरती हुई घास नोटिस की। एक और बच्चा बोला, "गधे की पूँछ पर मक्खी बैठ रही है तो गधा उसे देखकर हँस रहा है।" एक अन्य बच्चे ने कहा, "गधा मक्खी देखकर हँस रहा है और बिल्ली गधे को देखकर हँस रही है।" यह अवलोकन मुझे बेहद आश्चर्यजनक और काफ़ी अच्छा लगा। मैंने बच्चों से पूछा, "और

चित्र 14

क्या हो रहा है?" तो सबने बस चित्रों के रंग के बारे में बताया।

फिर हमने अन्तिम चित्र देखा और बातचीत को आगे बढ़ाया। एक बच्चे ने कहा, "सभी जानवर मिठाई की दुकान लूटने जा रहे हैं। शेर का बच्चा हाथी पर बैठा है और गधा आँखें बन्द करके जा रहा है।" मैंने बच्चे से पूछा, "गधा आँखें बन्द क्यों किए है?" तब मुझे उस बच्चे की बात याद आई जिसने बोला था कि गधा अच्छा आदमी है। इसलिए मैंने भी बोल दिया, "शायद इसलिए उसने आँखें बन्द कर लीं क्योंकि गधा अच्छा आदमी है।" वो बच्चा भी साथ में हँसने लगा। बच्चों से मैंने पूछा, "यह कैसे पता कि यह मिठाई की दुकान है।"

सब मिठाई खाने चल पड़े।

चित्र 15

एक बच्चे ने कहा, "यहाँ दुकानदार खड़ा है मिठाई के साथ, इसलिए।" फिर मैंने किताब के पहले पेज का मिठाई का चित्र दिखाया और पूछा, "यह मिठाई की दुकान नहीं है क्या?" तब बच्चों की तरफ़ से जवाब आया, "नहीं, क्योंकि यहाँ दुकानदार नहीं है।" अब यहाँ बच्चों का सीधा मानना था कि पहले के चित्र में केवल मिठाई रखी है तो वो मिठाई है। लेकिन अन्तिम चित्र में मिठाई के साथ दुकानवाला भी है तो यह मिठाई की दुकान है, क्योंकि उन्होंने दुकान पर हमेशा दुकानदार को देखा है। बिना दुकानदार के दुकान नहीं हो सकती है।

मैंने क्या समझा?

बच्चों के साथ इस तरह की बातचीत के बाद उनके साथ भाषा की कक्षा में काम को लेकर बहुत सारे विचार मेरे मन में घूमते रहे। किसी भी कहानी के साथ दिए गए चित्रों के हाव-भाव बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि जब बच्चे चित्र देखते हैं तो उस चित्र के हाव-भाव पर भी उनका ध्यान होता है। बच्चे कहानी के चित्रों का बहुत सूक्ष्म अवलोकन करते हैं। चित्र के हाव-भाव अगर कहानी से अलग या विपरीत हों तो वे भी बच्चे पहचान लेते हैं, और शायद तब उनके मन में उस कहानी के प्रति उलझन पैदा हो जाती है। जैसे– ख़रगोश और गाजर को लेकर बच्चों के मन में कई प्रश्न और उनसे सम्बन्धित तर्क थे। अगर सीधे कहानी सुनाकर चित्र दिखाते तो कहानी के अर्थ एवं चित्रों पर किए बच्चों के स्वतंत्र चिन्तन में विरोधाभास होता। कहानी जितनी महत्त्वपूर्ण होती है चित्र भी उतने ही महत्त्वपूर्ण होते हैं। बच्चों के लिए दोनों का बराबर महत्त्व होता है।

कहानीकार और चित्रकार के बीच ग़ज़ब का तालमेल होना चाहिए। वैसा तालमेल, जैसा संगीत गाते किसी गायक के गले और हारमोनियम बजातीं उसकी उँगलियों के बीच होता है। बच्चे अकेले चित्र को देखकर ही एक कहानी का निर्माण कर सकते हैं। अर्थात, कहानीकार की एक कहानी तो होती ही है, साथ में चित्रकार भी वही कहानी चित्रों के माध्यम से कह रहा होता है। बच्चे चित्र की बारीक़ियों पर भी बेहद ध्यान देते हैं। मसलन, 'मिठाई' कहानी पर कार्य करते हुए मैंने कभी गधे के हाव-भाव के अनुसार कहानी का मिलान नहीं किया था, पर बच्चों के लिए उसके हाव-भाव बहुत महत्त्वपूर्ण थे। बच्चों में चित्र देखकर भी स्वयं से कहानी बना लेने की अद्भुत क्षमता होती है। जब उन्हें स्वयं से वह कहानी सुनानी हो तो वे चित्रों के माध्यम से कहानी को नया आयाम देकर प्रस्तुत करते हैं।

चित्र के माध्यम से की गई कहानी की कल्पना उनकी मौलिक होती है।

मानक भाषा में कहानी सुनाए जाने पर बच्चे उसे उन्हीं मानक शब्दों के साथ याद रखते हैं। बाद में जब हम बच्चों से उसी कहानी को बोलने को कहते हैं तो मानक भाषा में सुनी हुई उस कहानी को वे अपनी स्थानीय भाषा में नहीं कह पाते, क्योंकि उनके आम बोलचाल में वह भाषा नहीं होती है। उन्हें वे शब्द भी नहीं मिल पाते हैं जिनमें बच्चे उस कहानी को प्रवाह में बोल सकें। इस तरह बार-बार ठीक से न बोल पाने पर बच्चों में आत्मविश्वास की कमी होने लगती है। वहीं जब बच्चे चित्र देख रहे होते हैं, तो चित्रों के माध्यम से वे मन में अपनी भाषा में कहानी को गढ़ रहे होते हैं। तब बच्चों से उनकी भाषा में कहानी सुनाने को कहने पर वे आत्मविश्वास के साथ उसे सुना पाते हैं क्योंकि उनकी स्थानीय भाषा के कई सारे शब्द उनके पास होते हैं। इन शब्दों के माध्यम से वे अपनी भाषा में बोली हुई बात पर तर्क भी कर पाते हैं। मानक भाषा में सुनी कहानी की अपेक्षा स्थानीय भाषा में सुनी कहानी पर वे बेहतर तरीक़े से प्रतिक्रिया देते हैं और स्थानीय भाषा में कहानी को बेहतर बोल पाते हैं।

बच्चे अपने व्यवहारिक ज्ञान के आधार पर कहानी में अनुमान लगाते हैं। मसलन, जब मिठाई की दुकान के दुकानदार पर बातचीत हो रही थी तो बच्चे इस बात पर सहमत थे कि बिना दुकानदार के दुकान नहीं होती, और मिठाई के दुकानदार को उन्होंने मिठाईवाला कहा था। जब मैंने बच्चों से मिठाईवाली के ऊपर बातचीत की तो सारे बच्चे इस बात पर एकमत थे कि मिठाईवाली नहीं होती, मिठाईवाला ही होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि उन्होंने अपने परिवेश में किसी महिला को मिठाई बेचते नहीं देखा था। इसके इतर जब मैंने सब्ज़ीवाली का उदाहरण देते हुए बात की तो बच्चे सब्ज़ीवाली और सब्ज़ीवाले पर सहमत थे, क्योंकि उन्होंने अपने परिवेश में सब्ज़ी बेचते हुए महिला एवं पुरुष, दोनों को ही देखा था। अर्थात, जो बच्चों ने अपने आसपास देखा होता है उसके आधार पर भी वे अनुमान लगाते हैं। बच्चों के बीच कहानी के साथ कोई भी गतिविधि करते समय उनके पूर्व-ज्ञान को ख़ूब उभारना चाहिए और गतिविधि में बार-बार उसका उपयोग करना चाहिए।

जो बच्चे भाषा को पढ़कर जानते हैं, वो कहानी के चित्रों से ज़्यादा शब्दों पर महत्त्व देते हैं। लेकिन जो नहीं पढ़ पाते, उनके लिए चित्र ही कहानी समझने का माध्यम या भाषा हो जाते हैं। इससे लाभ यह होता है कि बच्चे अपने अनुसार और अलग-अलग आयामों से कहानी के ऊपर चिन्तन कर पाते हैं। जो बच्चे कहानी पढ़ लेते हैं, उन सबके लिए कहानी का अर्थ सीमित होने की सम्भावना होती है, पर जो बच्चे पढ़ नहीं पाते उनमें हर बच्चे के लिए उस कहानी का अलग-अलग अर्थ काफ़ी रचनात्मक, व्यापक और रोचक होने की सम्भावना ज़्यादा रहती है। चित्र देखकर हर बच्चा अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर चिन्तन कर उसका अर्थ निर्माण कर रहा होता है। बच्चे कहानी के शब्दों के साथ चित्रों के भाव को जोड़कर उस कहानी के अर्थ को ग्रहण करते हैं।

बच्चों के अन्दर उपजा आत्मविश्वास ही उनकी पाठ की विषयवस्तु से जुड़ने और सीखने की पहली कड़ी साबित हो सकता है। कमज़ोर आत्मविश्वास से घिरा बच्चा उतना बेहतर नहीं सीख सकता, जितना हम चाहते हैं।

सुमन पटेल ने डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर से इतिहास विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। स्कूल में शिक्षकों के साथ बाल साहित्य को लेकर काम करने में उनकी विशेष रुचि है। बच्चों के लिए लघु कहानियाँ और कविताएँ लिखने के साथ-साथ बुन्देली भाषा में शिक्षकों और बच्चों के साथ कहानी सुनाने की विधा को लेकर लगातार प्रयास कर रही हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन सागर, मध्य प्रदेश में टीचर एजुकेटर के रूप में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : suman.patel@azimpremjifoundation.org